प्रयुक्त अनुसंधान या व्यवहृत अनुसंधान
(Applied Research)

शैक्षिक अनुसंधान का अधिकांश स्वरूप व्यवहृत होता है, क्योंकि इसके तहत अधिकतर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं एवं अनुदेशनात्मक सामग्रियों के बारे में सामान्यीकरण विकसित करने का प्रयास किया जाता है। इसके अन्तर्गत किसी पूर्व निरूपित सिद्धांत, ज्ञान, अनुसिद्धांत या नियम का एक विशिष्ट परिस्थिति में अनुप्रयोग किया जाता है। शैक्षिक शोध के तहत यह परिस्थिति शिक्षण, अधिगम या मूल्यांकन की प्रक्रिया से सम्बन्धित हो सकती है। इस प्रकार के शोध को प्रयोगशाला अथवा वैकल्पिक परिस्थितियों में सम्पन्न किया जा सकता है तथा इसके तहत वैज्ञानिक विधि के सोपानों का अनुसरण होता है।

प्रयुक्त अनुसंधान का गन्तव्य: जीवन की अनेकानेक व्यावहारिक परिस्थितियों में नये सत्यों एवं सामान्यीकरण की प्रयोज्यता (लागू हो सकने की सम्भावना) का पता लगाकर प्रक्रिया तथा उत्पाद दोनों की गुणवत्ता में सुधार लाना व्यवहृत अनुसंधान का चरम गन्तव्य है। इस प्रकार के अनुसंधान का लक्ष्य ज्ञान की परिधि में विस्तार या किसी सिद्धांत में विकास लाने के प्रति उन्मुख न होकर पूर्व निरूपित सिद्धान्त या पूर्व अन्वेषित ज्ञान को कहाँ, कब और कैसे प्रयोग में लाया जाए जिससे जीवन की वे परिस्थितियां जहां उनका उपयोग हो, उन्नत एवं अर्थपूर्ण बन जाएं, यह पता लगाना है।

प्रयुक्त अनुसंधान के उदाहरण :- शैक्षिक अनुसंधान के तहत इस प्रकार के शोधों के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। शैक्षिक टेक्नालॉजी, अभिक्रमित अधिगम, कक्षा-शिक्षण में अन्तर्क्रिया, मापन एवं मूल्यांकन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण, विद्यालय-वातावरण, शैक्षिक प्रबन्ध तथा शैक्षिक परिस्थितियों में नेतृत्व आदि से जुड़े शोध अधिकतर व्यवहृत अनुसंधान की कोटि में रखे जा सकते हैं।

व्यवहृत अनुसंधान की महत्वपूर्ण विशेषताएं : 1. प्रयुक्त अनुसंधान का सम्बन्ध यथार्थ की मूर्त एवं अमूर्त दोनों प्रकार की परिस्थितियों से है, क्योंकि इसमें पूर्व अन्वेषित ज्ञान या सिद्धांत का अनुप्रयोग जीवन की मूर्त

PAGE :
DATE :

घटनाओं या प्रक्रियाओं के संदर्भ में किया जाता है जिससे उससे होने वाले गुणात्मक एवं परिमाणात्मक परिवर्तनों का अनुमान लगाया जा सके।

2. व्यवहृत अनुसंधान का मुख्य ध्येय एक प्रयोजनवादी समीक्षा या जाँच करना है जिससे पूर्व निरूपित नियमों, सिद्धांतों तथा सामान्यीकरण का किन सम्भव दशाओं में उपयोग किया जा सकता है, इस बात का संकेत प्राप्त हो सके।

3. प्रयुक्त अनुसंधान का संदर्भ उन सभी तात्कालिक एवं दीर्घकालिक परिस्थितियों से सम्बद्ध है जिनमें पूर्व ज्ञात सत्यों, तथ्यों एवं सिद्धान्तों का अनुप्रयोग संगत कहा जा सकता है।

4. प्रयुक्त अनुसंधान में जिन प्रश्नों को दृष्टिगत रखकर शोध सम्पन्न होता है, उनकी मूल प्रकृति तथ्यों, सम्प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों का विविध परिस्थितियों में अनुप्रयोग किये जा सकने की सम्भावना का पता लगाने से जुड़ी रहती है।

5. ऐसे अनुसंधानों में शोध की परिकल्पना सम्बन्धों की संरचना की दृष्टि से अपेक्षाकृत मूर्त स्तर पर निरूपित होती है और अधिकतर परिस्थितियों में इसका स्वरूप 'यदि ऐसा किया जाए तो यह परिणाम घटित होगा'..... अर्थात एक सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति (Conditional Proposition) की तरह व्यक्त होता है।

6. मौलिक अनुसंधान की भाँति इस प्रकार के शोधों में भी सर्वप्रथम 'समग्र' को परिभाषित करना पड़ता है तथा उससे एक प्रतिनिधि समूह अर्थात प्रतिदर्श (Sample) का चुनाव किया जाता है। पूरा अध्ययन इस प्रतिदर्श पर सम्पन्न होता है तथा प्रेक्षित परिणामों को पूरे समग्र पर लागू किया जाता है जिसे सामान्यीकरण कहा जाता है। इस दृष्टि से मौलिक एवं व्यवहृत अनुसंधानों में पर्याप्त समानता है।

7. व्यवहृत अनुसंधान के अन्तर्गत शोध की रूपरेखा (डिजायन) तर्कबद्ध रीति से विकसित की जाती है तथा इसका कार्यान्वयन उतना ही कठोरतापूर्वक होता है जितना मौलिक अनुसंधान के परिप्रेक्ष्य में प्रायः देखने को मिलता है। यहां इतना अन्तर अवश्य होता है कि वे विविध परिस्थितियाँ जिनमें सिद्धांतों एवं नियमों को लागू किया जाता है, वे अत्यन्त गतिशील प्रकृति रखती है। अतः यहां कहां इन परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर शोध की रूपरेखा में परिवर्तन करना पड़ता है।

Teacher's Sign.

Remark :

घटनाओं या प्रक्रियाओं के संदर्भ में किया जाता है, जिससे उससे होने वाले गुणात्मक एवं परिमाणात्मक परिवर्तनों का अनुमान लगाया जा सके।

2. व्यवहृत अनुसंधान का मुख्य ध्येय एक प्रयोजनवादी समीक्षा या जाँच करना है जिससे पूर्व निरूपित नियमों, सिद्धांतों तथा सामान्यीकरण का किन सम्भव दशाओं में उपयोग किया जा सकता है, इस बात का संकेत प्राप्त हो सके।

3. प्रयुक्त अनुसंधान का संदर्भ उन सभी तात्कालिक एवं दीर्घकालिक परिस्थितियों से सम्बद्ध है जिनमें पूर्व ज्ञात सत्यों, तथ्यों एवं सिद्धान्तों का अनुप्रयोग संगत कहा जा सकता है।

4. प्रयुक्त अनुसंधान में जिन प्रश्नों को दृष्टिगत रखकर शोध सम्पन्न होता है, उनकी मूल प्रकृति तथ्यों, सम्प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों का विविध परिस्थितियों में अनुप्रयोग किये जा सकने की सम्भावना का पता लगाने से जुड़ी रहती है।

5. ऐसे अनुसंधानों में शोध की परिकल्पना सम्बन्धों की संरचना की दृष्टि से अपेक्षाकृत मूर्त स्तर पर निरूपित होती है और अधिकतर परिस्थितियों में इसका स्वरूप 'यदि ऐसा किया जाए तो यह परिणाम घटित होगा'..... अर्थात एक सोपाधिक प्रतिज्ञप्ति (Conditional Proposition) की तरह व्यक्त होता है।

6. मौलिक अनुसंधान की भाँति इस प्रकार के शोधों में भी सर्वप्रथम 'समग्र' को परिभाषित करना पड़ता है तथा उससे एक प्रतिनिधि समूह अर्थात प्रतिदर्श (Sample) का चुनाव किया जाता है। पूरा अध्ययन इस प्रतिदर्श पर सम्पन्न होता है तथा प्रेक्षित परिणामों को पूरे समग्र पर लागू किया जाता है जिसे सामान्यीकरण कहा जाता है। इस दृष्टि से मौलिक एवं व्यवहृत अनुसंधान में पर्याप्त समानता है।

7. व्यवहृत अनुसंधान के अन्तर्गत शोध की रूपरेखा (डिजायन) तर्कबद्ध रीति से विकसित की जाती है तथा इसका कार्यान्वयन उतना ही कठोरतापूर्वक होता है जितना मौलिक अनुसंधान के परिप्रेक्ष्य में प्रायः देखने को मिलता है। यहां इतना अन्तर अवश्य होता है कि वे विविध परिस्थितियाँ जिनमें सिद्धांतों एवं नियमों को लागू किया जाता है, वे अत्यन्त गतिशील प्रकृति रखती है। अतः यहां कहां इन परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर शोध की रूपरेखा में परिवर्तन करना पड़ता है।

Remark :

Teacher's Sign.

8. व्यवहृत अनुसंधान के अन्तर्गत भी पूर्ववर्णित अनुसंधान की तरह मुख्य मुद्दा सामान्यीकरण का निर्माण करना होता है, किन्तु इस प्रकार के सामान्यीकरण में निहित उद्देश्य थोड़ी भिन्नता रखते है। इस अनुसंधान के तहत सामान्यीकरण द्वारा 'प्रक्रिया' या 'परिणाम' या दोनों में सुधार लाना प्रमुख ध्येय रहता है।

9. जैसा कि पहले बताया जा चुका है, व्यवहृत अनुसंधान के परिणाम भी औपचारिक ढंग से विज्ञापित किये जाते है। ये परिणाम प्रायः विनिबंधों, शोध प्रबन्धों (थीसिस), लघु शोध प्रबन्धों [डिजेर्टेशन] या शोध-पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत होते है।

10. शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहृत अनुसंधान का उपयोग प्रत्यक्ष रूप से देखने की कोशिश की जाती है। इसलिए ऐसे शोधों के निहितार्थ तथा उसके आधार पर निर्देशक रूपरेखा अलग से व्यक्त की जाती है जिससे शैक्षिक परिस्थितियों एवं इनसे जुड़ी प्रक्रियाओं में सुधार लाने हेतु ठोस प्रस्ताव विकसित करने में मदद मिले। यहां शोधकर्ता की भरसक ~~परिस्थितियों में सुधार~~ कोशिश यह रहती है कि अनुसंधान द्वारा प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों के आधार पर शैक्षिक परिस्थितियों में सुधार लाने हेतु उपयोगी संकेत या सुझाव दिये जा सकें।

व्यवहृत अथवा प्रयुक्त अनुसंधान का तर्काधार : व्यवहृत अनुसंधान के विकास एवं व्यापक प्रयोग में निहित मुख्य तर्काधार मौलिक अनुसंधान से भिन्न है। यहां प्रमुख मान्यता यह है कि जीवन की मूर्त परिस्थितियों के स्पष्ट वर्णन, व्याख्या एवं अवबोध हेतु सत्यों एवं सामान्यीकृत तथ्यों एवं उनके सम्बन्धों की प्रयोज्यता का व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ तथा इन्द्रियानुभविक सत्यापन (परीक्षण) एक आवश्यक एवं वांछनीय लक्ष्य है तथा इस रीति से किसी खास परिस्थिती को समझने एवं उसका सामना करने में मानवीय प्रयास की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है। सभी प्रकार के शोध का चरम गंतव्य है — किसी परिस्थिती विशेष के बारे में ज्ञान का विस्तार एवं समस्या-समाधान तक पहुंचने में गुणात्मक परिवर्तन लाना। कहना न होगा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में व्यवहृत अनुसंधान की प्रणाली अत्यन्त संगत एवं प्रभावी है।

PAGE :
DATE : / /

व्यवहृत अनुसंधान के उद्देश्य :- शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में प्रयुक्त या व्यवहृत अनुसंधान के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. शैक्षिक क्षेत्रों में पहले से प्रतिपादित नियमों व सिद्धांतों की उपयोगिता का मूल्यांकन करके उनकी व्यावहारिक कसौटी पर जाँच करना।
2. सर्वप्रथम शिक्षा की विभिन्न परिस्थितियों में पूर्वज्ञान, सत्यता एवं सामान्यीकृत नियमों के व्यावहारिक जाँच द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि लाना।
3. शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक सरल, स्पष्ट तथा उपयोगी बनाने के लिए शैक्षिक समस्याओं का समाधान करना।
4. पहले से प्रतिपादित सिद्धान्तों, तथ्यों में ज्ञान के उचित प्रयोग के उद्देश्य निर्धारित करना।

व्यवहृत अनुसंधान की सीमाएं :- व्यवहृत अनुसंधान की अपनी सीमाएं है। यह सुविदित है कि हमारी व्यावहारिक परिस्थितियां जिनमें पूर्व अन्वेषित सत्यों, सिद्धान्तों एवं सामान्यीकरण को लागू करना होता है, अत्यन्त गतिशील, जटिल एवं अस्पष्ट होती है जिससे उन पर कठोर नियंत्रण एवं एक ऐसे संरचनात्मक स्वरूप आरोपित कर सकना सम्भव नहीं है। इस प्रकार शोध के परिणामों को अन्य परिस्थितियों में सामान्यीकृत हो सकने की सम्भावना सीमित रहती है तथा पूरा शोध-उपक्रम समय एवं धन की दृष्टि से अपेक्षाकृत खर्चीला बन जाता है। ऐसे शोधों के निष्कर्ष विश्वसनीय एवं वैधता दोनों ही पैमानों पर प्रायः विवाद के घेरे में सरलतापूर्वक आ जाते हैं।

19/06/2021
प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Remark :

Teacher's Sign.